पथरीली राहों पर चलने का संकल्प

● उषा राय

वह न तो मेधा पाटकर है, न ही सुन्दरलाल बहुगुणा। वह न धरने पर बैठता है और न जुलूस निकालता है। लेकिन पर्यावरण और गरीबों के लिए वह मसीहा है। के. तुलसी राव आंध्र प्रदेश में वन विभाग का एक अधिकारी है। अपने उद्देश्य के लिए वह गांव-गांव चुपचाप घूमता रहता है। उसकी बातों से न केवल चेंचू जनजाति, गांव वाले और निजी स्वयं सेवी संस्थाएं प्रभावित होती हैं वरन अन्य भी मानने लगे हैं कि उनका अस्तित्व, जंगल और पर्यावरण के अस्तित्व पर टिका है। नागार्जुन सागर-श्री सेलम का बाघ सुरक्षित अभयारण्य और गांव की आर्थिक प्रगति एक दूसरे के पर्याय हैं। यह बात उनकी समझ में आ गई है।

श्री सेलम बाघ परियोजना में सहायक वन संरक्षक की हैसियत से काम करने वाले श्री राव को बाघ संरक्षण के लिए विश्व वन्य कोष की ओर से पुरस्कृत किया जा चुका है। वर्ष 1997-98 के लिए उन्हें बाघों के प्रति लोगों में लगाव बढ़ाने के लिए पुरस्कृत किया गया था। नागार्जुन सागर श्री सेलम भारत का सबसे बड़ा बाघों का सुरक्षित अभयारण्य है। यह 3600 वर्ग किलोमीटर के बीच फैला है। चेचूं जनजाति के लोगों ने जंगलों को पूरी तरह तहस-नहस कर रखा था। उसमें करीब पांच लाख जानवर चरते हैं। जंगल से सटे चौबीस गांव हैं जबकि कोर से बाहर 96 गांव बसे हैं।

सन् 1978 में जब उसे सुरक्षित अरण्य घोषित किया गया था, तब यहां केवल 43 बाघ थे। वन अधिकारियों के प्रयास से 1989 में बाघों की संख्या 94 हो गई। वन अधिकारियों का यह प्रयास गांव वालों को रास नहीं आया। उग्रवादियों की मदद से वे बाघों को जहर देकर मारने लगे। 1994 तक बाघों की संख्या 35 तक पहुंच गई।

उस कठिन दौर में वन अधिकारियों ने श्री राव के अनुभवों को परखते हुए उनकी नियुक्ति श्री सेलम कर दी। श्री राव ने अपनी जिम्मेदारियां समझते हुए इस असंभव से कार्य को क्रियान्वित करना शुरू किया। विश्व बैंक से मिले 10 करोड़ को इस क्षेत्र के आर्थिक विकास के लिए लगाने की योजना बनाई। उन्होंने शिकारियों और पोचरों को बाघ अभयारण्य की सुरक्षा का दारोमदार सौंपा। उन्होंने आसपास के दो सौ गांवों की आबादी को जंगल की सुरक्षा का महत्व समझाया और 10400 हेक्टेयर वन भूमि को फिर से हरा-भरा करने की योजना शुरू की। पहले जहां कुछ लोग जंगलों की सुरक्षा में लगे थे, वहीं आज दस हजार गांव वाले इसकी सुरक्षा कर रहे हैं।

नागार्जुन सागर-श्री सेलम अभयारण्य पांच जिलों से घिरा है। पूर्वी घाट पर फैला यह सुरक्षित वन अनेक जैविक विविधताओं से भरा है। आर्थिक विकास के कार्यक्रम के कारण यहां बाघों की संख्या बढ़ी है। 1997 की गणना के अनुसार यहां अभी 43 बाघ हैं। लेखिका उन गांव वालों से मिली, जिन्होंने एक बाघिन को अपने बच्चे के साथ महबूबनगर में देखा था। इसके अलावा जंगल लगने के कारण गांव वाले बाघों के आंतक से पिछले सात-आठ वर्षों से बचे हुए हैं।

श्री तुलसी राव की आर्थिक विकास योजना अच्छे नतीजे लाई। उनकी नियुक्ति जब 1994 में आत्मापुर में हुई थी, तब वन अधिकारियों के मनोबल गिरे हुए थे। उसी समय रेंज ऑफिसर श्री रमैया की उग्रवादियों ने बारलुती में हत्या कर दी थी। जब भी वन अधिकारी लकड़ी की तस्करी के मामले में हाथ डालने का दुसाहस दिखाते, उन्हें गांव की औरतों तक का विरोध झेलना पड़ता था। वे अफसरों की आंखों में मिर्च झोंक देतीं। गांव वाले उग्रवादियों की मदद करते। कई तो नक्सली भी हो गए थे।

रमैया की मृत्यु के बाद इश्तहार बांटे गए कि वन अधिकारियों की जंगलों में आने पर पाबंदी लगा दी गई है। जो इसका उल्लंघन करेंगे, उनकी जान भी जा सकती है। तुलसी राव ने अपने पूरे स्टाफ को इकट्ठा किया और लोगों की समस्या की चर्चा की और इसे हल करने की कोशिश शुरू की।

तुलसी राव के रास्ते बहुत पथरीले थे। एक बार वह पेचेरुवु के जंगलों से गुजर रहे थे तो लकड़ी काटने की आवाज सुनी। एक वन अधिकारी ने साहस कर एक व्यक्ति को कुल्हाड़ी के साथ पकड़ लिया। उस व्यक्ति ने सीटी बजाई और देखते ही देखते सैकड़ों गांव वाले कुल्हाड़ी लेकर इकट्ठे हो गए। तुलसी राव ने स्थिति संभाली और कहा कि मैं जानता हूं कि तुम लोग अपनी आजीविका के लिए पेड़ काट रहे हो। राव के शब्दों में नरमी और सहानुभूति पाकर गांव वाले फूट पड़े। उन्हें दुख था कि उन्हें लुटेरा और तस्कर समझा जाता है। वह भी इस तरह की जिंदगी से निजात पाने की इच्छा रखते थे। वे चाहते थे कि कोई उनकी मदद करे। श्री राव ने आर्थिक विकास की योजना उनके सामने रखी। गांव वाले तैयार हो गए। उन्होंने अपनी लकड़ी से लदी ट्रक उन्हें सौंप दी।

दूसरे दिन दो वन अधिकारी गांव वालों से मिलने गए तो वहां उन्हें चाय पिलाई गई जबकि इससे पहले वन अधिकारी पिटाई खाकर वापस लौटते थे। इस योजना के कार्यान्वयन के लिए श्री राव विशेष प्रशिक्षण के लिए आस्ट्रेलिया, नेपाल और दूसरे देशों में गए। इस बीच श्री आदि नारायण ने पदभार संभाला और गांव वालों के बीच घूमकर सद्भाव का माहौल बनाया। अक्तूबर में जब तुलसी राव वापस लौटकर आए और बाघ सुरक्षित अभयारण्य के फील्ड अफसर बनाए गए तो गांव वाले उनके विचारों को जल्दी समझ सके। इस बाघ अभयारण्य के आसपास के गांवों में पचास प्रशिक्षण शिविर बनाए गए। गांव वालों को अपने विकास की रूपरेखा खुद ही बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा था। पहले चरण में 115 गांवों के लिए योजना बनाई गई। पहली बार उनके संसाधनों का लेखा-जोखा तैयार हुआ। कितने पशु हैं, कितनी लकड़ी ईंधन पर खर्च होती है, इन जरूरतों की लिस्ट बनी। इस पर चर्चा से पता चला कि वर्ष 1994 में 15 करोड़ की लकड़ी काटी गई। दस स्वयंसेवी संस्थाएं गांव वालों के विकास कार्य में मदद देने के लिए आगे आईं। उन्होंने गांव वालों को पानी, मिट्टी और जंगलों की रक्षा के नुस्खे बताए, साथ ही जीविकोपार्जन के उपाय भी।

महबूबनगर जिले के दोक्कुथेडा गांव की लाम्बाडी जनजाति की औरतों ने अपनी परंपरागत वेशभूषा में श्री राव का स्वागत किया। उन्होंने नृत्य किया, जंगलों के गीत गाए। साथ ही हरे वृक्षों को न काटने का संकल्प किया। श्री राव के हाथ में अपनी जरूरतों की सूची थमाई। उस गांव में चेक डैम बनाए गए। पानी जमा किया गया। सभी मर्द-औरतों ने मिल कर बजट कमेटियां बनाई हैं। वे उसमें हर रोज एक रुपया जमा करते हैं। गांव वाले जो पांच सौ भी बमुश्किल कमाते थे, आज दो हजार महीना कमा रहे हैं। गांव की एक औरत बताती है कि हमने पानी, बिजली और पक्के मकान का सपना देखा था, जो आज सच हुआ है।

1995 में जब पहली बार श्री राव दोक्कुथेडा गांव आए थे तो विकास का वहां नामोनिशान नहीं था। वह पंचायत के विकास के नक्शे तक में नहीं था लेकिन जंगल से सटा होने के कारण गांव वाले पेड़ों पर ही निर्भर थे। उनकी सबसे गंभीर समस्या पानी की थी। गांव से बह कर जाती एक जलधारा में चेक डैम बनाया गया। अब गांव में 15 चेक डैम हैं। अब दोक्कुथेडा गांव के लोग साल में तीन फसलें उगाते हैं। जो बंजर जमीन थी, आज वहां मूंगफली, चावल और टमाटर प्रचुर मात्रा में उगाए जा रहे हैं। उन्होंने घर बनाने के लिए लकड़ी का इस्तेमाल बंद कर दिया है। उनकी पहचान आर्थिक संरक्षण दस्ते के सदस्य के रूप में हो रही है। इस गांव की सबसे मुखर नेता एक औरत है, जो कभी उग्रवादी हुआ करती थी। अब वह जंगलों के गीत लिखती और गाती है।

गांव वाले बकरी की बजाय भेड़ पालने लगे हैं। आर्थिक विकास योजना के तहत हर परिवार को दस भेड़ें मिलती हैं। गांव में अपनी राशन की दुकान है। 22 पक्के मकान हैं, साथ ही एक प्राथमिक पाठशाला भी। इस तरह के विकास की कहानियां गांव दर गांव घूमती हैं। गांव वालों ने कई जगह से टूटी एक पंद्रह किलोमीटर लंबी नहर की मरम्मत की। आठ साल से सूखे तालाब में आज लबालब पानी है। इससे दो हजार हेक्टेयर भूमि की सिंचाई हो रही है। मन्नानु में बांस बाड़ी वर्षों से सूखी पड़ी थी, 1997-98 में उसे फिर से हराभरा कर दिया गया। कल तक गांव वाले और उग्रवादी बाघ परियोजनाओं के नाम से चिढ़ते थे और उन्हें खदेड़ देना चाहते थे, लेकिन आज वे खुद उसके रक्षक बने हुए हैं।

इस दौर में चेंच जनजातिय लोगों ने श्री राव को झटका दिया है, पर इससे श्री राव और निजी स्वयंसेवी संस्थाओं के हौसले पस्त नहीं हुए हैं। उन्हें जंगलों से हटा दिया गया था, लेकिन वे फिर जंगलों में लौटने लगे हैं। उन्हें फिर से बसाने की कोशिश हो रही है। कई नौकरियां और कारोबार के जरिए उन्हें जीविका उपार्जन का रास्ता दिखाया जा रहा है। धुंआरहित चूल्हे, सौर ऊर्जा से जलते लैंप आदि ने जंगल में रह रहे गांव वालों की सोच को नई दिशा दी है।

चेंचू जनजाति के एक दम्पती को गांव वालों को नई जीवन शैली के बारे में बताने के लिए हर रोज सौ रुपए मिल रहे हैं। औरतों को सुविधाएं देने के प्रयास हो रहे हैं, क्योंकि मर्द तो दारू पी कर पड़ जाते हैं।

आर्थिक विकास की यह योजना अगले वर्ष समाप्त हो रही है। श्री राव वहां से कहीं और चले जाएंगे, तब क्या उनकी शुरू की गई ये योजनाएं जीवित रह पाएंगी? दस स्वयंसेवी संस्थाओं का 'आश्रम' इन योजनाओं की गाड़ी आगे ले जाने में सफल होगा।

ज्ञानवर्द्धक लेख

'पथरीली राहों पर चलने का संकल्प' लेख बेहद रोचक, मनोरंजक ज्ञानवर्द्धक एवं मार्गदर्शन लगा। जानकारी देने वाली लेखिका उषा राय तो बधाई की पात्र ही हैं।

लेकिन श्री तुलसीराव वास्तव प्रेरणा के स्रोत हैं जिन्होंने साहस, समझदारी, बुद्धि चातुर्य एवं परोपकारी भावना के साथ इस देश के साथ दरिद्र गांव वाले बेरोजगारों को रोजगार दिलवाया तथा इस विकट समस्या को हल करने में पहला लेकिन मजबूत तथा ज्ञानवर्द्धक कदम रखा।

श्री राव को बहुत बहुत बधाई।

—प्रभाष चंद्र गर्ग, डाली, चांदपुर (बिजनौर)

महिला व शिशु स्वास्थ्य पर मीडियाकर्मियों ने चिन्ता जताई

जनसंख्या विकास व लिंगभेद विषयक कार्यशाला शुरु

उदयपुर, 18 अगस्त (नसं)। प्रेस इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया तथा सेवा मंदिर के तत्वावधान में मीडियाकर्मियों के लिए 'जनसंख्या विकास तथा लिंगभेद' विषयक तीन दिवसीय कार्यशाला यहां होटल राजदर्शन में बुधवार को शुरू हुई। कार्यशाला में प्रतिभागियों ने बढ़ती जनसंख्या के कारणों का विश्लेषण किया, साथ ही महिला व शिशु स्वास्थ्य को लेकर चिन्ता जताई। कार्यशाला का उद्घाटन पापुलेशन फाउंडेशन ऑफ इंडिया के कार्यकारी निदेशक ए.आर. नन्दा ने किया। इस अवसर पर नन्दा ने कहा कि जनसंख्या नियंत्रण के लिए सरकार, प्रशासन, स्वयंसेवी संस्थाओं सहित हर मोर्चे पर प्रभावी उपाय करने तथा उन पर अमल की जरूरत है। उन्होंने लगातार बढ़ रही जनसंख्या पर चिन्ता जाहिर करते हुए कहा कि इससे विकास की गति बाधित हो रही है तथा इस का कुप्रभाव हर वर्ग पर पड़ रहा है। उन्होंने गांधीजी के ग्राम स्वराज का उदाहरण देते हुए कहा कि गांधीजी ने महिला उत्थान व लिंग समानता की हिमायत की थी, आज के परिप्रेक्ष्य में इसी की आवश्यकता है। उन्होंने चीन की नीतियों से सीख लेने की सलाह भी दी। प्रथम व द्वितीय सत्र में 'प्रयास' चित्तौड़गढ़ के डॉ. नरेन्द्र गुप्ता ने जनसंख्या नियंत्रण तथा स्वास्थ्य मामलों पर अपनी श्रव्य दृश्य प्रस्तुति में कई ज्वलन्त मुद्दों को उठाया। उन्होंने कहा कि देश में जनसंख्या वृद्धि का सबसे बड़ा कारण संख्यात्मक तौर पर युवा वर्ग की अधिकता है, इसी कारण संतानोत्पत्ति अधिक हो रही है। कम उम्र में लड़कियों का विवाह, प्रसव व रक्ताल्पता तथा इसी कारण होने वाली मौतें भी एक बड़ी समस्या है। गुप्ता ने बताया कि दो बच्चों में अन्तर में कमी भी बड़ी खतरनाक है। डॉ. कंचन माथुर ने राजस्थान में भ्रूण हत्या को बड़ा कलंक बताते हुए इसके पीछे लड़के की चाह को अहम कारण बताया। उन्होंने कहा कि सरकारी कानून के बावजूद धड़ल्ले से लिंग परीक्षण हो रहा है तथा लड़की का पता लगने पर भ्रूण हत्याएं की जा रही हैं। सेवा मंदिर की डॉ. संजना मोहन ने राजस्थान में स्वास्थ्य सेवाओं के बारे में एक सर्वे रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस कार्यशाला में प्रदेश के कई मीडियाकर्मी हिस्सा ले रहे है। प्रतिभागियों को लिंगभेद पर 'आईना' तथा श्याम बेनेगल की 'हरी भरी' फिल्म दिखाई गई। कार्यशाला का समापन शुक्रवार को होगा।

मीडियाकर्मियों की कार्यशाला आज से

उदयपुर, 17 अगस्त। प्रेस इस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (पीआईआई) एवं सेवा मंदिर की ओर से 18 से 20 अगस्त तक होटल राजदर्शन में 'जनसंख्या, विकास एवं लिंगभेद' विषय पर मीडिया कर्मियों की कार्यशाला आयोजित होगी। तीन दिवसीय इस गोष्ठी में देशभर से एकत्रित होने वाले विषय विशेषज्ञ सुरक्षित मातृत्व, कन्या भ्रूण हत्या, प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाएं आदि पर पत्र वाचन करेंगे। कार्यशाला में दिल्ली, जयपुर, कोटा, बीकानेर जोधपुर आदि जिलों से पत्रकार भाग लेंगे।

सुरक्षित मातृत्व की दिशा में प्रयास बढ़ाने की जरूरत

उदयपुर,19 अगस्त। देश में सुरक्षित मातृत्व की दिशा में बहुत कम काम हो पाया है और इस दिशा में जागृति के लिए मीडिया को अपनी अहम भूमिका निभानी चाहिए। सुरक्षित सेक्स ही एड्स से बचने का एकमात्र उपाय है। ये विचार यहां होटल राजदर्शन में सेवा मंदिर और प्रेस इंस्टीट्यूट आफ इंडिया के संयुक्त तत्वावधान में पोपुलेशन डवलमेंट ,जेंडर जैसे विषयों पर मीडिया की भूमिका विषयक तीन दिवसीय सेमिनार के दूसरे दिन की चर्चा में उभरकर सामने आए। कुल तीन सत्रों में सुरक्षित मातृत्व, परिवार नियोजन और एड्स पर प्रमुख रूप से चर्चा हुई। इन विषयों पर पत्रकारों को जानकारी देने के लिए मीडिया लेब का आयोजन भी किया गया। सुरक्षित मातृत्व पर प्रेस इंस्टीट्यूट की अनु आनंद और कीर्ति अयंगर ने अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि देश में सुरक्षित मातृत्व की दृष्टि से स्थिति संतोषजनक नहीं मानी जा सकती। शिशु मृत्यु और मातृ मृत्यु दर में कमी लाने की दिशा में प्रयास बढ़ाने की जरूरत है। गांवों में जागरूकता बढाने की आवश्यकता है। इस दिशा में मीडिया अहम भूमिका अदा कर सकता है। दूसरे सत्र में सेवानिवृत्त आई ए एस अधिकारी सुधीर वर्मा ने एड्स के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए कहा कि इस रोग से बचाव का एकमात्र उपाय सुरक्षित सेक्स ही है। तीसरे सत्र में यू एन एस पी ए की ईना सिंह ने जनसंख्या वृद्धि के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने 1994 में काहिरा में जनसंख्या पर हुए अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनमें पारित प्रस्तावों का पिछले दस वर्षों में क्या प्रभाव रहा इस पर जानकारी दी। कार्यक्रम का संयोजन उषा राय ने किया।